दिल्ली-हरिनगर। श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति प्रो.रमेश कुमार पाण्डे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नेहा तथा ब्र.कु. अंकिता। साथ हैं ब्र.कु. एन.के.चौधरी तथा ब्र.कु.देवेन्द्र।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। जिला बार एसोसिएशन में कार्यक्रम के दौरान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश पूनम सुनेजा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. उषा,माउण्ट आबू। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. सरोज।

सिवान-बिहार। चैनपुर में शिवजयंती महोत्सव के अवसर पर 'एक शाम शिव पिता के नाम' कार्यक्रम में मंचासीन हैं विधायक बहन कविता जी, ब्र.कु. सुधा, डी.डी.सी. राजकुमार तथा जे.डी.यू नेता अजय सिंह।

कामेत-इटावा(उ.प्र.)। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण करते हुए पत्रकार देशधर्म स्वामिनी श्रीमति रेनू भदौरिया, ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य।

मैनपुरी-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सम्मानित होने के पश्चात् सम्मान चिन्ह के साथ महिला एवं बाल संरक्षण अधिकारी डॉ.अल्का मिश्रा, कवयित्री श्री देवी, ब्र.कु.अवन्ती तथा अन्य।

डेरा बस्सी-पंजाब। महाशिवरात्रि पर शहर में शांति यात्रा द्वारा शिव संदेश देते हुए ब्र.कु. भाई बहनें।

पानीपत-हरियाणा। 'बैलेंसिंग लाईफ एण्ड वर्क' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पानीपत रिफाईनरी के ई.डी. रामगोपाल जी, जिलाध्यक्ष बीजेपी प्रमोद विज, हरियाणा खादी ग्राम उद्योग बोर्ड के अध्यक्ष संजय भाटिया, आई.जी. सुमन मंजरी, डॉ.राजीव, हरियाणा चेम्बर ऑफ कॉमर्स के सेक्रेट्री राकेश गर्ग, ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.शिवानी तथा ब्र.कु.भारतभूषण।

गुरूग्राम-सेक्टर-23। नॉर्थ कैम्पस युनिवर्सिटी में 'महिला सशक्तिकरण' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए युनिवर्सिटी के उपकुलपति डॉ. प्रेम व्रत। साथ हैं डी.सी.पी. सुमित कुमार, प्रो. डॉ.सुरेश वर्मा, डॉ. सुजाता शर्मा, ब्र.कु.उर्मिल तथा ब्र.कु. सुदेश।

अति निकटता का...परिणाम

- ब्र.कु. विश्वनाथ

'चलो दोस्त, अपने उस मित्र से मिलने जायें', - एक मित्र ने दूसरे मित्र को कहा। 'लेकिन उसे फोन किये बिना नहीं जाना चाहिए। उसकी अनुकूलता और प्रतिकूलता तो जान लेना चाहिए ना' - दूसरे मित्र ने स्पष्टता की। 'यार जो निकट के हों उनसे क्या मुलाकात का समय लेना!' प्रथम मित्र का प्रत्युत्तर।

मनुष्य को दूसरों के सिर पर पड़ने की कला सीखनी नहीं पड़ती। बहुत सारे अधिकार मनुष्य स्वयं ही भोग लेना स्वीकार कर लेता है। अति सुलभता आपका गौरव कम कर देती है। दुर्लभता कई बार आपका महत्व बढ़ाने की निमित्त बन जाती है।

अतिथि शब्द बहुत प्राचीन समय से प्रचलित है। कार्यक्रम में अतिथि-विशेष जैसा हास्यास्पद शब्द दूसरा कोई नहीं, पत्र लिखकर, फोन कर, जिस तारीख पर हाज़िर रहने के लिए तय कर आने वाले व्यक्ति विशेष को 'अ-तिथि' कैसे कह सकते हैं? हकीकत में तो वे सतिथि हैं। जब प्रत्यापन या वाहन व्यवहार के यांत्रिक साधन नहीं थे, तब मेहमान आकस्मिक रूप से ही पहुँच जाते थे, आने का समय या तिथि के बारे में बिना बताये उसका आगमन होता था। इसलिए अ-तिथि कहते थे।

आज प्रत्यापन या संचार के अनेक साधन होने के बावजूद बहुत लोग कुछ भी बताये बिना ही किसी भी वक्त पहुंच जाते हैं और आपके मूड को बिना परखे अपनी बात उनके ऊपर थोपते रहते हैं। सरलता से उन बातों को लेना, ये उनके लिए अग्नि परीक्षा समान होता है।

बहुत सारे लोगों को काम पड़ने पर निकटता का नाटक करना बखूबी आता है। ऐसे चाटुकार मनुष्यों की भी इस दुनिया में कोई कमी नहीं है। निकटता, ये दूसरी वस्तु है और खुशामद या स्वार्थ खातिर निकटता का प्रदर्शन करना, ये दूसरी बात है।

सूर्य का ही उदाहरण ले लीजिए। उगता सूर्य सबको पसंद आता है। पूज्य लगता है। लेकिन सूर्य आकाश में होने के बावजूद गरमी के दिनों में उनकी निकटता हमें दुखदायक लगती है। वह बादलों से ढ़का रहे, ऐसी उनकी गैरहाज़िरता हमें पसंद होती है। उससे उल्टा बरसात की ऋतु में सूर्य हाज़िर होकर पूरी तरह से अपने तेजोमय स्वरूप में उपस्थित हो, ऐसी हमारी प्रतिक्षा रहती है। लोग उपयोगिता के पैमाने पर ही मनुष्य की हाज़िरी और गैरहाज़िरी की इच्छा रखते हैं। मनुष्य थोड़ा उपलब्ध रहे, उससे उल्टा थोड़ा समय अनुपलब्ध रहे तो उनकी मांग बढ़ जाती है। बाज़ार में भी जो वस्तु अधिक मात्रा में सहजता से उपलब्ध होती है तो उसकी मांग कम हो जाती है। लेकिन जब उसी वस्तु की किसी कारणवश किल्लत हो जाती है तो वह महंगी हो जाती है। सामाजिक सम्बन्धों में भी यह बात उतनी ही लागू होती है।

बहुत बार कई लोग निकटता का भ्रम तोड़ने के निमित्त बनते हैं। जिसे हम शेर जैसा मानते हैं उसकी निकटता का अनुभव करने के बाद अपने को लोमड़ी जैसा समझने लगते हैं। काम के समय काम न आये तब आपकी प्रयासपूर्वक बनाई निकटता भी व्यर्थ साबित होती है। सम्बन्ध या जान-पहचान, ये तो अमृत आमवृक्ष की तरह है। उसके फल खाने का उतावलापन स्वाद को बिगाड़ देता है। प्रणय संबंधों या मैत्री टूटने में भी बहुत बार अति निकटता महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

यहाँ राबर्ट ग्री का दिया उदाहरण सटीक बैठता है कि ऊँट के अठारह अंग जिस व्यक्ति ने पहली बार देखा होगा वह व्यक्ति ऊंट को देखकर भाग गया होगा। दूसरा व्यक्ति हिम्मत कर पास गया लेकिन आगे नहीं बढ़ा। लेकिन तीसरा व्यक्ति ऊंट के बिल्कुल पास में गया और गले में डोरी डालकर उसे अपना बना लिया। प्रत्येक घटना को विवेकपूर्ण दृष्टि से देखने के कारण सर्प समान लगती वस्तु भी वरदान समान लगने लगती है।

व्यवहार में मनुष्य प्रेमपूर्वक संबंध परिपक्व होने जितना धैर्य नहीं दिखाता है। प्रेम को पाने के लिए संबंध को 'कल्पवृक्ष' समान मानकर अपनी इच्छाओं को तृप्त करने का साधन न बनाइये।

फ्रोन्टे ने संत्रियों और चौकीदारों का उदाहरण देते हुए कहा कि कुछेक संत्रियों की बटालियन को सागर के किनारे निगरानी रखने का काम सौंपा था। उसे दूर से कुछ तैरता हुआ, आगे बढ़ता हुआ दिखाई दिया। इसलिए उसने कहा कि नौका, युद्ध के लिए जहाजी काफिला है। पांच मिनट के बाद उसने देखा तो उसे लगा कि एक बोट तैरते-तैरते आगे बढ़ रही थी, लेकिन कुछ समय के बाद जब वह वस्तु अत्यंत पास में आई तब उसे पता पड़ा कि कुछेक लकड़ियां तैरती-तैरती आगे बढ़ रही थीं। सम्बन्ध में भी ऐसा ही होता है। मनुष्य मोह या आकर्षण के वश होकर व्यक्ति की ओर खीचता जाता है और निकटता का अनुभव होते अति सामान्य लगता है।

अति निकटता के दुष्परिणाम से बचने की तरकीब

1. प्रेम के सम्बन्धों को स्वाभाविक रीति से ही विकसित होने दें, उस पर हावी न हों।
2. सम्बन्ध की भी एक आचार संहिता है। उसके लिए अति निकटता नहीं लेकिन समझदारी पूर्वक अंतर भी ज़रूरी है।
3. कोई एक घटना से सम्बन्ध या संबंधियों का मूल्यांकन ना करें।
4. बहुत लोग अवसरवादी होते हैं, ऐसे समयभक्षी मनुष्यों से दूरी रखें।
5. निकटता के कारण दूसरे व्यक्ति के जीवन की स्वतंत्रता को जोखिम में रखने का ख्याल न रखें।
6. स्वयं में स्वयं ही पवित्रता व खुशियों को बनाये रखें, ना कि दूसरों के द्वारा प्राप्त खुशी को आधार बनायें।